पद २७

(राग: कालंगडा - ताल: केहरवा)

हा कोल खेळा हो। कठिण ही ग्रंथि खोला हो।।धू.।। आकाशा रंग नाहीं। रंगा त्या नांव नांहीं। मुळींच नाहीं तेंचि सत्य झालें बाबा।।१।। वंध्येसीं पुत्र नाहीं। पुत्रा कलत्र नाहीं वरचि नाहीं कैंचा वऱ्हाडी बाबा।।२।। ब्रह्मीं हें दृश्य नाहीं। दृश्यासी थारा नाहीं। भ्रमचि नाहीं कोण बद्ध मुक्त बाबा।।३।। विभक्त भक्त नाहीं भक्तांत द्वैत नाहीं। माणिकचि हा चिन्मार्तांड बाबा।।४।।